वेस्टमिन्स्टर संक्षिप्त मसीही धर्म-प्रश्नोत्तरी

The Westminster Shorter Catechism

प्रेरितों के काम 2:39 – क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

RTF-USA WESTMINSTER STANDARDS SERIES

वेस्टमिन्स्टर
संक्षिप्त
मसीही
धर्म-प्रश्नोत्तरी

The Westminster Shorter Catechism

Originally published in 1648 as *The Grounds and Principles of Religion Contained in a Shorter Catechism* by the Westminster Assembly and later by the General Assembly of the Church of Scotland.

Published in London and Edinburgh.

Hindi Edition © 2023 by:

Reformation Translation Fellowship (RTF-USA)
3026 6th Ave.
Beaver Falls, PA 15010
www.rtf-usa.com

Contact Information: rtfdirector@gmail.com

FOR FREE DISTRIBUTION ONLY – NOT FOR SALE

Acknowledgment:

Help has been taken from Rev. Charles Angert Study book on the WSC

एन्गर्ट, रेव्ह. चार्ल्स. *मसीही विश्वास और जीवन का आधारः वेस्टमिनस्टर संक्षिप्त धर्मशिक्षा प्रश्नावली पर आधारित अध्ययन पुस्तिका*

PCPNetwork of South Asia 2012.

वेस्टमिन्स्टर संक्षिप्त मसीही धर्म-प्रश्नोत्तरी

The Westminster Shorter Catechism

प्र. 1. मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

उ. मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य सदा सर्वदा के लिए परमेश्वर की महिमा करना और उसमें आनन्दित रहना है।

1 कुरिन्थियों 10:31; रोमियों 11:36; भजन संहिता 73:25 – 28.

प्र. 2. हमारी अगवाई करने के लिये, कि हम कैसे उसकी महिमा कर सकते हैं और कैसे उसमें आनन्दित रह सकते हैं, परमेश्वर ने हमें कौन सा नियम दिया है?

उ. परमेश्वर का वचन जो कि पुराने एवं नए नियम के पवित्रशास्त्र में निहित है, यही हमारी अगवाई के लिए एकमात्र नियम है, कि हम कैसे परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं और कैसे उसमें आनन्दित रह सकते हैं।

2 तीमुथियुस 3:16; इफिसियों 2:20; 1 यूहन्ना 1:3 – 4.

प्र. 3. पवित्रशास्त्र (बाइबल) मुख्य रूप से क्या सिखाते हैं?

उ. पवित्रशास्त्र (बाइबल) मुख्य रूप से यह सिखाते हैं, कि मनुष्य को परमेश्वर के विषय में क्या विश्वास करना है, और परमेश्वर मनुष्य से कौन से कर्तव्य चाहता है।

2 तीमुथियुस 1:13; 2 तीमुथियुस 3:16.

प्र. 4. परमेश्वर क्या है?

उ. परमेश्वर एक आत्मा है, जो अपने अस्तित्व, बुद्धि, शक्ति, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य में अनन्त, अनादि और अपरिवर्तनीय है।

यूहन्ना 4:24; अय्यूब 11:7 – 9 भजन 90:2; याकूब 1:17; निर्गमन 3:14; भजन संहिता 147:5; प्रकाशितवाक्य 4:8; 15:4; निर्गमन 34:6 – 7.

प्र. 5. क्या एक से अधिक परमेश्वर हैं?

उ. नहीं, केवल एक ही जीवित और सच्चा परमेश्वर है।

व्यवस्थाविवरण 6:4; यिर्मयाह 10:10.

प्र. 6. परमेश्वरत्व में कितने व्यक्ति हैं?

उ. परमेश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। ये तीनों एक ही परमेश्वर हैं, जो तत्व में एक हैं, और शक्ति व महिमा में बराबर हैं।

1 यूहन्ना 5:7; मत्ती 28:19.

प्र. 7. परमेश्वर के विधान (decrees) क्या हैं?

उ. परमेश्वर के विधान (decrees), उसकी अपनी इच्छा के मत के अनुसार उसकी सनातन मनसा हैं; जिनके द्वारा, उस ने, जो कुछ होता है, उसको अपनी महिमा के लिए पहले ही से ठहराया है।

इफिसियों 1:4, 11; रोमियों 9:22 – 23.

प्र. 8. परमेश्वर अपने विधानों (decrees) को कैसे पूरा करता है?

उ. परमेश्वर अपने विधानों को सृष्टि के कार्यों और अपने देख-रेख के प्रबन्धन वाले कार्यों के द्वारा पूरा करता है।

भजन संहिता 148:8; यशायाह 40:26; दानिय्येल 4:35; प्रेरितों के काम 4:24 – 28; प्रकाशितवाक्य 4:11.

प्र. 9. सृष्टि के रचने का कार्य क्या है?

उ. सृष्टि के रचने का कार्य यह है कि परमेश्वर ने सारी सृष्टि को, बिना किसी वस्तु के, अपने सामर्थ्य के वचन के द्वारा, छः दिन के अन्तराल में, और सब कुछ बहुत ही अच्छा बनाया।

उत्पत्ति 1; इब्रानियों 11:3.

प्र. 10. परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि कैसे की?

उ. परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी करके, अपने स्वरूप के अनुसार, ज्ञान, धार्मिकता और पवित्रता में बनाया, और उन्हें सब प्राणी जीवों पर अधिकार दिया।

उत्पत्ति 1:26 – 28; कुलुस्सियों 3:10; इफ़िसियों 4:24.

. **प्र. 11. परमेश्वर के देख-रेख वाले प्रबंधन (Providence) के कार्य क्या हैं?**

उ. परमेश्वर के देख-रेख वाले प्रबंधन (Providence) के कार्य उस की परम पवित्रता, बुद्धि और शक्ति से अपनी सारी सृष्टि व उनके सभी कार्यों को संभालना व उन का संचालन करना है।

भजन संहिता 145:17; भजन संहिता 104:24; यशायाह 28:29; इब्रानियों 1:3; भजन संहिता 103:19; मत्ती 10:29 – 31.

प्र. 12. परमेश्वर ने मनुष्य के साथ, जिस दशा में उसकी सृष्टि हुई थी, कौन से देख-रेख वाले प्रबंधन के विशेष कार्य ठहराये?

उ. जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, तो उसने पूर्ण आज्ञाकारिता की शर्त पर उसके साथ जीवन की वाचा बाँधी; और उसको भले एवं बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाने को मना किया, जिसको नहीं मानने का दण्ड उसने मृत्यु ठहराई।

गलातियों 3:12; उत्पत्ति 2:17.

प्र. 13. क्या हमारे प्रथम माता-पिता, उस पहली अवस्था में बने रहे, जिसमें उनकी सृष्टि हुई थी?

उ. हमारे प्रथम माता-पिता, अपनी इच्छा की स्वतंत्रता पर छोड़े जाने के कारण, परमेश्वर के विरूद्ध पाप करने के द्वारा, अपनी उस पहली अवस्था से गिर गये जिसमें उनकी सृष्टि हुई थी।

उत्पत्ति 3:6 – 8, 13; सभोपदेशक 7:29.

प्र. 14. पाप क्या है?

उ. परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ना, या उस के अनुरूप न होना, दोनों बातें पाप हैं।

1 यूहन्ना 3:4.

प्र. 15. वह पाप क्या था, जिसके कारण हमारे प्रथम माता-पिता उस पहली अवस्था से गिर गये जिसमें उनकी सृष्टि हुई थी?

उ. वह पाप, जिसके कारण हमारे प्रथम माता-पिता उस पहली अवस्था से जिसमें उनकी सृष्टि हुई थी गिर गये; उस फल का खाना था जिसे परमेश्वर ने खाने के लिए मना किया था।

उत्पत्ति 3:6, 12.

. **प्र. 16. क्या आदम के प्रथम अपराध में सब मानव जाति पाप में गिर गई?**

उ. हाँ। क्योंकि, जो वाचा आदम के साथ बाँधी गई थी, वह न केवल उसके लिए थी, बल्कि उसके वंशजों के लिए भी थी; इसलिए समस्त मानव जाति ने, जो स्वाभाविक रीति से आदम से उत्पन्न हुए, आदम के प्रथम अपराध में, पाप किया, और उस के साथ पाप में गिर गये।

उत्पत्ति 2:16 – 17; रोमियों 5:12; 1 कुरिन्थियों 15:21 – 22.

प्र. 17. पाप में गिरावट मनुष्य को किस अवस्था में ले आया?

उ. पाप में गिरावट मनुष्य को पाप और कष्ट की अवस्था में ले आया।

रोमियों 5:12.

प्र. 18. जिस अवस्था में मनुष्य गिर गया, उसकी पापमयता किन बातों में निहित है?

उ. जिस अवस्था में मनुष्य गिर गया, उसकी पापमयता इन बातों में निहित है: आदम के प्रथम पाप का दोष, पहले वाली धार्मिकता से रहित होना, एवं उसके सम्पूर्ण स्वभाव का भ्रष्ट हो जाना, इन सब को सामान्य रूप से मूल पाप कहा जाता है; तथा वे सारे पाप कर्म जो इससे उत्पन्न होते हैं।

रोम 5:12, 19; रोम 5:10 – 20; इफ़िसियों 2:1 – 3; याकूब 1:14 – 15; मत्ती 15:19.

प्र. 19. जिस अवस्था में मनुष्य गिर गया, उसमें क्या कष्ट हैं?

उ. समस्त मानव जाति पाप में अपने गिरावट के कारण परमेश्वर की संगति से रहित हो गयी, तथा उसके क्रोध व श्राप की भागी बन गयी, और इस कारण इस जीवन के सभी क्लेश, मृत्यु और अनंतकाल की नरक की पीड़ा के अधीन ठहरा दी गयी है।

उत्पत्ति 3:8, 10, 24; इफ़िसियों 2:2 – 3; गलातियों 3:10; सभोपदेशक 3:39; रोमियों 6:23; मत्ती 25:41, 46.

प्र. 20. क्या परमेश्वर ने समस्त मानव जाति को इस पाप और कष्ट की अवस्था में नष्ट होने के लिए छोड़ दिया?

उ. परमेश्वर ने, महज अपनी भली इच्छा के कारण, अनादि काल से, कुछ लोगों को अनंत जीवन देने के लिए चुन लिया, तथा एक छुड़ाने वाले (Redeeemer) के द्वारा उन्हें पाप और कष्ट की अवस्था से बचाने, एवं उन्हें उद्धार की अवस्था में लाने के लिए, परमेश्वर ने अनुग्रह की वाचा बाँधी।

इफ़िसियों 1:4; रोमियों 3:20 – 22; गलातियों 3:21 – 22.

प्र. 21. परमेश्वर के चुने हुओं का छुड़ानेवाला (Redeemer) कौन है?

उ. परमेश्वर के चुने हुओं का एकमात्र छुड़ानेवाला प्रभु यीशु ख्रीष्ट है, जो परमेश्वर का सनातन पुत्र होते हुए, मानव बना, और इस प्रकार दो अलग-अलग स्वभावों और एक व्यक्ति में, वह परमेश्वर एवं मनुष्य था, और निरंतर हमेशा रहेगा।

1 तीमुथियुस 2:5 – 6; यूहन्ना 1:14;. गलातियों 4:4; रोमियों 9:5; लूका 1:35; कुलुस्सियों 2:9; इब्रानियों 7:24 – 25.

प्र. 22. ख्रीष्ट, परमेश्वर का पुत्र होते हुए, किस रीति से मनुष्य बना?

उ. परमेश्वर का पुत्र, ख्रीष्ट, वास्तविक शरीर व यथार्थ विवेकी आत्मा को धारण करके मनुष्य बना, और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से कुंवारी मरियम की कोख में गर्भधारण होकर उससे पैदा हुआ, फिर भी वह निष्पाप है।

इब्रानियों 2:14, 16; इब्रानियों 10:5; मत्ती 26:38; लूका 1:27, 31, 35, 42; गलातियों 4:4; इब्रानियों 4:15; इब्रानियों 7:26.

प्र. 23. हमारा छुड़ानेवाला होकर, ख्रीष्ट कौन से पदों के कार्य को पूरा करता है?

उ. हमारा छुड़ानेवाला होकर, ख्रीष्ट अपने अपमान एवं प्रतिष्ठा दोनों ही अवस्था में नबी, याजक और राजा के पदों के कार्य को पूरा करता है।

प्रेरितों के काम 3:21 – 22; इब्रानियों 12:25 के साथ 2 कुरिन्थियों 13:3; इब्रानियों 5:5 – 7; इब्रानियों 7:25; भजन संहिता 2:6; यशायाह 9:6 – 7; मत्ती 21:5; भजन संहिता 2:8 – 11.

प्र. 24. ख्रीष्ट नबी के पद के कार्य को कैसे पूरा करता है?

उ. ख्रीष्ट अपने वचन एवं आत्मा के द्वारा, हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की इच्छा को हम पर प्रकट करके, नबी के पद के कार्य को पूरा करता है।

यूहन्ना 1:18; 1 पतरस 1:10 – 12; यूहन्ना 15:15; यूहन्ना 20:31.

प्र. 25. ख्रीष्ट याजक के पद के कार्य को कैसे पूरा करता है?

उ. परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने एवं परमेश्वर से हमारा मेल मिलाप कराने के लिए एक ही बार स्वयं का बलिदान करके चढ़ाने, और हमारे लिए निरंतर सदा विनती करने के द्वारा, ख्रीष्ट याजक के पद के कार्य को पूरा करता है।

इब्रानियों 9:14, 28; इब्रानियों 2:17; इब्रानियों 7:24 – 25.

प्र. 26. ख्रीष्ट राजा के पद के कार्य को कैसे पूरा करता है?

उ. हमें अपनी सामर्थ्य के अधीन में लाने, हम पर प्रभुता करने और हमारी रक्षा करने में, और अपने एवं हमारे सभी शत्रुओं को रोकने और उन पर विजय प्राप्त करने के द्वारा ख्रीष्ट राजा के पद के कार्य को पूरा करता है।

प्रेरितों के काम 15:14 – 16; यशायाह 33:22; यशायाह 32:1 – 2; 1कुरि 15:25.

प्र. 27. ख्रीष्ट का अपमान (Humiliation) किन बातों में निहित है?

उ. ख्रीष्ट का अपमान इन बातों में निहित होती है, कि वह पैदा हुआ, और गरीबी में पैदा हुआ, व्यवस्था के अधीनता में किया गया, इस जीवन के कष्टों, परमेश्वर के क्रोध, और क्रूस की स्रापित मौत को उसने सहा, दफ़नाया गया व कुछ समय के लिये मौत के वश में रहा।

लूका 2:7; गलातियों 4:4; इब्रानियों 12:2 – 3; यशायाह 53:2 – 3; लूका 22:44; मत्ती 27:46; फिलिप्पियों 2:8; 1कुरि 15:3 – 4; प्रेरितों के काम 2:24 – 27, 31.

प्र. 28. ख्रीष्ट की प्रतिष्ठा (Exaltation) किन बातों में निहित होती है?

उ. ख्रीष्ट की प्रतिष्ठा इन बातों में निहित होती है कि वह मृतकों में से तीसरे दिन जी उठा, स्वर्ग में ऊपर गया, पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा, और अन्तिम दिन संसार का न्याय करने के लिए वह आएगा।

1 कुरिन्थियों 15:4; मरकुस 16:19; इफ़िसियों 1:20; प्रेरितों के काम 1:11; प्रेरितों के काम 17:31.

प्र. 29. हम ख्रीष्ट द्वारा खरीदे गए छुटकारे के भागी किस प्रकार बनाये जाते हैं?

उ. हम ख्रीष्ट द्वारा खरीदे गए छुटकारे के भागी, उसके पवित्र आत्मा द्वारा इसे हम में प्रभावशाली रीति से लागू करने के द्वारा बनाए जाते हैं।

यूहन्ना 1:11 – 12; तीतुस 3:5 – 6.

प्र. 30. पवित्र आत्मा, ख्रीष्ट द्वारा खरीदे गए छुटकारे को, हम में किस प्रकार लागू करता है?

उ. हम में विश्वास पैदा करने, और इस प्रकार हमें, हमारी प्रभावशाली बुलाहट में, ख्रीष्ट के साथ जोड़ने के द्वारा, पवित्र आत्मा, ख्रीष्ट द्वारा खरीदे गए छुटकारे को हम में लागू करता है।

इफिसियों 1:13 – 14; यूहन्ना 6:37, 39; इफिसियों 2:8; इफिसियों 3:17; 1 कुरिन्थियों 1:9.

प्र. 31. प्रभावशाली बुलाहट क्या है?

उ. प्रभावशाली बुलाहट परमेश्वर के आत्मा का वह कार्य है, जिसके द्वारा हमारे पाप व कष्ट के विषय में हमें क़ायल करके, हमारे मनों को ख्रीष्ट के ज्ञान में प्रकाशित करके, और हमारी इच्छाओं को नया करके, वह हमें यीशु ख्रीष्ट को, जैसे वह हमें सुसमाचार में मुफ्त पेश किया गया है, अपनाने के लिए मनाता व योग्य बनाता है।

2 तीमुथियुस 1:9; 2 थिस्सलुनिकियों 2:13 – 14; प्रेरितों के काम 2:37; प्रेरितों के काम 26:18; यहेजेकेल 36:26 – 27; यूहन्ना 6:44 – 45; फिलिप्पियों 2:13.

प्र. 32. वे जो प्रभावशाली रीति से बुलाये गये हैं, इस जीवन में क्या लाभ प्राप्त करते हैं?

उ. वे जो प्रभावशाली रीति से बुलाये गये हैं, इस जीवन में धर्मी ठहराया जाना, लेपालकपन और पवित्रीकरण, तथा अन्य कई लाभों को प्राप्त करते हैं, जो इस जीवन में इनके साथ आते हैं अथवा इनसे निकलते हैं।

रोमियों 8:30; इफिसियों 1:5; 1 कुरिन्थियों 1:26, 30.

प्र. 33. धर्मी ठहराया जाना क्या है?

उ. धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह की एक क्रिया है, जिसके द्वारा वह हमारे सब पापों को क्षमा करता है, और अपनी दृष्टि में हमें धर्मी स्वीकार करता है। यह सिर्फ यीशु ख्रीष्ट की धार्मिकता के कारण है जो हमारे लिये गिनी जाती है, और केवल विश्वास से प्राप्त होती है।

रोमियों 3:24 – 25; रोमियों 4:6 – 8; 2 कुरिन्थियों 5:19, 21; रोमियों 5:17 – 19; गलातियों 2:16; फ़िलिप्पियों 3:9.

प्र. 34. लेपालकपन क्या है?

उ. लेपालकपन परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह की एक क्रिया है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के पुत्रों के स्वरूप में ग्रहण किये जाते हैं, और पुत्र होने के सब लाभों का अधिकार प्राप्त करते हैं।

1 यूहन्ना 3:1; यूहन्ना 1:12; रोमियों 8:17.

प्र. 35. पवित्रीकरण क्या है?

उ. पवित्रीकरण परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का वह कार्य है, जिसके द्वारा हमारा संपूर्ण मनुष्यत्व परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार नया बनाया जाता हैं, और पाप के लिए अधिकाधिक मरते जाने और धार्मिकता के लिए जीवन बिताने के लिये हम योग्य बनाये जाते हैं।

2 थिस्सलुनिकियों 2:13; इफ़िसियों 4:23 – 24; रोमियों 6:4, 6; रोमियों 8:1.

प्र. 36. इस जीवन में जो लाभ धर्मी ठहराया जाने, लेपालकपन व पवित्रीकरण के साथ आते या उनसे निकलते हैं, वे क्या हैं?

उ. इस जीवन में जो लाभ धर्मी ठहराया जाने, लेपालकपन व पवित्रीकरण के साथ आते या उनसे निकलते हैं, वे यह हैं, परमेश्वर के प्रेम की निश्चयता, मन की शान्ति, पवित्र आत्मा में आनन्द, अनुग्रह का बढ़ना और उसमें अपने जीवन के अंत तक स्थिर बने रहना।

रोमियों 5:1 – 2, 5; रोमियों 14:17; नीतिवचन 4:18; 1 यूहन्ना 5:13; 1 पतरस 1:5.

प्र. 37. विश्वासियों को मृत्यु के समय पर ख्रीष्ट से क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

उ. विश्वासियों की आत्माएँ उनकी मृत्यु के समय पर पवित्रता में सिद्ध की जाती हैं, और तुरन्त महिमा में चली जाती हैं। उनके शरीर अभी भी ख्रीष्ट

में जुड़े होकर अपनी क़ब्रों में पुनरुत्थान के दिन तक आराम करते हैं।

इब्रानियों 12:23; 2 कुरिन्थियों 5:1, 6, 8; फ़िलिप्पियों 1:23; लूका 23:43; 1 थिस्सलुनिकियों 4:14; यशायाह 57:2; अय्युब 19:26 – 27.

प्र. 38. विश्वासी पुनरुत्थान पर ख्रीष्ट से क्या लाभ प्राप्त करते हैं?

उ. पुनरुत्थान पर विश्वासी महिमा में जिलाए जाएँगे, और न्याय के दिन सब के सामने स्वीकार किए एवं निर्दोष ठहराये जाएँगे, और अनन्तकाल तक परमेश्वर का सम्पूर्ण आनन्द लेते हुए पूर्णतः आशीषित किए जायेंगे।

1 कुरिन्थियों 15:43; मत्ती 25:23; मत्ती 10:32; 1 यूहन्ना 3:2; 1 कुरिन्थियों 13:12; 1 थिस्सलुनिकियों 4:17 – 18.

प्र. 39.परमेश्वर मानव से क्या कर्तव्य चाहता है?

उ. परमेश्वर मानव से चाहता है, कि मानव उसकी प्रकट इच्छा के प्रति आज्ञाकारी रहे।

मीका 6:8; 1 शमूएल 15:22.

प्र. 40. अपनी आज्ञाकारिता के लिये परमेश्वर ने मानव के लिए कौन सा नियम सबसे पहला प्रकट किया?

उ. अपनी आज्ञाकारिता के लिये परमेश्वर ने मानव के लिए जिस नियम को सबसे पहले प्रकट किया, वह नैतिक व्यवस्था थी।

रोमियों 2:14-15; रोमियों 10:5.

प्र. 41. यह नैतिक व्यवस्था संक्षेप में कहाँ निहित है?

उ. यह नैतिक व्यवस्था संक्षेप में दस आज्ञाओं में निहित है।

व्यवस्थाविवरण 10:4; मत्ती 19:17.

प्र. 42. दस आज्ञाओं का सार क्या है?

उ. दस आज्ञाओं का सार यह है, कि हम परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी सामर्थ्य और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखें; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें।

मत्ती 22:37-40.

प्र. 43. दस आज्ञाओं की भूमिका क्या है?

उ. दस आज्ञाओं की भूमिका इन शब्दों में है, “मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।”

निर्गमन 20:2.

प्र. 44. दस आज्ञाओं की भूमिका हमें क्या सिखाती है?

उ. दस आज्ञाओं की भूमिका हमें यह सिखाती है, कि क्योंकि यहोवा परमेश्वर है, और हमारा परमेश्वर और छुड़ानेवाला है, इसलिये हम उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने के लिए बाध्य है।

लूका 1:74-75; 1 पतरस 1:15-19.

प्र. 45. पहली आज्ञा क्या है?

उ. पहली आज्ञा यह है, “तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।”

निर्गमन 20:3.

प्र. 46. पहली आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. पहली आज्ञा में आवश्यक है, कि हम परमेश्वर को ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर और अपना परमेश्वर जानें और स्वीकार करें, और इसी के अनुसार ही उसकी आराधना और महिमा करें।

1 इतिहास 28:9; व्यवस्थाविवरण 26:17; मत्ती 4:10; भजन संहिता 29:2.

प्र. 47. पहली आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. पहली आज्ञा में यह मना है - सच्चे परमेश्वर का इनकार करना, या उसे सच्चे परमेश्वर और अपने परमेश्वर होने के अनुसार उसकी आराधना और महिमा न करना; एवं उस आराधना और महिमा को जिसके योग्य केवल वह है, किसी अन्य को देने के लिए यह हमें मना करता है।

भजन संहिता 14:1; रोमियों 1:21; भजन संहिता 81:10-11; रोमियों 1:25 – 26.

प्र. 48. पहली आज्ञा के इन शब्दों में, अर्थात "मुझे छोड़", हमें क्या विशेष रूप से सिखाया गया है?

उ. पहली आज्ञा में ये शब्द, "मुझे छोड़", हमें यह सिखाते हैं, कि परमेश्वर जो सब कुछ देखता है, वह किसी दूसरे ईश्वर को मानने के पाप पर दृष्टि करता व उससे बहुत क्रोधित होता है।

यहेजेकेल 8:5 – 18; भजन संहिता 44:20 – 21.

प्र. 49. दूसरी आज्ञा क्या है?

उ. दूसरी आज्ञा यह है, "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि

मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूं।"

निर्गमन 20:4 – 6.

.

प्र. 50. दूसरी आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. दूसरी आज्ञा में आवश्यक है कि सभी आराधना के रीति और विधियों को, जैसे परमेश्वर ने अपने वचन में ठहराये हैं, उन्हें हम ग्रहण करें, मानें और शुद्ध और सम्पूर्ण रखें।

व्यवस्थाविवरण 32:46; मत्ती 28:20; प्रेरितों के काम 2:42.

प्र. 51. दूसरी आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. दूसरी आज्ञा में मूर्तियों के द्वारा, या किसी अन्य तरीके से जो परमेश्वर के वचन में नहीं ठहराया गया, परमेश्वर की आराधना करना मना है।

व्यवस्थाविवरण 4:15 – 19; निर्गमन 32:5, 8; व्यवस्थाविवरण 12:31 – 32.

प्र. 52. दूसरी आज्ञा के साथ कौन से तर्क जुड़े हैं?

उ. दूसरी आज्ञा के साथ जुड़े तर्क यह हैं कि परमेश्वर का संपूर्ण प्रभुत्त्व हमारे ऊपर है, उसका औचित्य हम में है, और उचित रीति से अपनी आराधना किए जाने की वह जलन रखता है।

भजन संहिता 95:2 – 3, 6; भजन संहिता 45:11; निर्गमन 34:13 – 14.

प्र. 53. तीसरी आज्ञा क्या है?

उ. तीसरी आज्ञा यह है कि तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा।

निर्गमन 20:7.

प्र. 54. तीसरी आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. तीसरी आज्ञा में आवश्यक है कि परमेश्वर के नामों, उपाधियों, गुणों, आराधना के नियमों, वचन और कार्यों को पवित्रता और आदर के साथ उपयोग किया जाए।

मत्ती 6:9; व्यवस्थाविवरण 28:58; भजन संहिता 68:4; प्रकाशितवाक्य 15:3 – 4; मलाकी 1:11, 14; भजन संहिता 138:1 – 2; अय्युब 36:24.

प्र. 55. तीसरी आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. तीसरी आज्ञा ऐसी किसी भी वस्तु को तुच्छ जानने एवं निन्दा करने से मना करती है, जिसके द्वारा परमेश्वर अपने आपको प्रकट करता है।

मलाकी 1:6 – 7, 12; मलाकी 2:2; मलाकी 3:14.

प्र. 56. तीसरी आज्ञा के साथ क्या तर्क जुड़ा है?

उ. तीसरी आज्ञा के साथ जुड़ा तर्क यह है, कि इस आज्ञा को तोड़ने वाले लोग, भले ही मनुष्यों के दण्ड से बच जाएं, तो भी यहोवा हमारा परमेश्वर उन्हें अपने धर्मी न्याय से कदापि न बचने देगा।

1 शमूएल 2:12, 17, 22, 29; 1 शमूएल 3:13; व्यवस्थाविवरण 28:58 – 59.

प्र. 57. चौथी आज्ञा क्या है?

उ. चौथी आज्ञा यह है कि, तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना; परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो; क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।

निर्गमन 20:8 – 11.

प्र. 58. चौथी आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. चौथी आज्ञा में उन निर्धारित समयों को पवित्र बनाए रखना आवश्यक है, जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन में नियुक्त किए हैं; स्पष्ट रूप से सप्ताह में एक पूरा दिन, जिसको उसने अपने लिए पवित्र विश्रामदिन ठहराया है।

व्यवस्थाविवरण 5:12 – 14.

प्र. 59. सात दिनों में से किस दिन को परमेश्वर ने साप्ताहिक विश्रामदिन ठहराया है?

उ. संसार के आरम्भ से लेकर ख्रीष्ट के जी उठने तक, परमेश्वर ने सप्ताह के सातवें दिन को साप्ताहिक विश्रामदिन नियुक्त किया था; और ख्रीष्ट के जी उठने से लेकर संसार के अन्त तक, सप्ताह के पहले दिन को नियुक्त किया है, जो कि मसीही विश्रामदिन है।

उत्पत्ति 2:2 – 3; 1 कुरिन्थियों 16:1 – 2; प्रेरितों के काम 20:7.

प्र. 60. विश्रामदिन को कैसे पवित्र रखा जाए?

उ. विश्रामदिन को ऐसे पवित्र रखा जाए, कि पूरे दिन पवित्र विश्राम करें, यहाँ तक कि ऐसे सांसारिक और मनोरंजन के कार्य, जो अन्य दिनों में उचित है, उनसे विश्राम करें; और, दया के और अति आवश्यकता के कार्यों के समय को छोड़कर, पूर्ण समय सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की आराधना में लगाए।

निर्गमन 20:8, 10; निर्गमन 16:25 – 28; नहेम्याह 13:15 – 19, 21 – 22; लूका 4:16; प्रेरितों के काम 20:7; भजन संहिता 92 शीर्षक; यशायाह 66:23; मत्ती 12:1 – 13.

प्र. 61. चौथी आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. चौथी आज्ञा में यह मना है, कि विश्रामदिन के लिए जो कर्तव्य कर्म ठहराये हुए हैं, उनको न करना, या उनको लापरवाही के साथ करना। साथ में यह भी मना किया गया है, कि आलस्य से, या पापमय कार्य करने से, या हमारे सांसारिक काम और मनोरंजन के विषय में अनावश्यक विचार, शब्द और काम करने से, उस दिन को अपवित्र करना।

यहेजेकेल 22:26; आमोस 8:5; मलाकी 1:13; प्रेरितों के काम 20:7, 9; यहेजेकेल 23:38; यिर्मयाह 17:24 – 26; यशायाह 58:13.

प्र. 62. चौथी आज्ञा के साथ क्या तर्क जुड़े हैं?

उ. चौथी आज्ञा के साथ जुड़े तर्क ये हैं: कि परमेश्वर ने हमारे काम धन्धों के लिए सप्ताह के छ: दिन हमें दिये हैं; सातवें दिन को उसने अपने लिए ठहराया है; उसने आप ही सातवें दिन सृष्टि की उत्पत्ति करने से विश्राम कर हमें विश्राम करने का एक नमूना दिया; और उसने विश्रामदिन को आशीषित ठहराया।

निर्गमन 20:9, 11.

प्र. 63. पाँचवी आज्ञा क्या है?

उ. पाँचवी आज्ञा यह है कि, तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।

निर्गमन 20:12.

प्र. 64. पाँचवी आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. पाँचवी आज्ञा में आवश्यक है कि हम प्रत्येक जन को उनके पद और सम्बन्ध के अनुसार, चाहे वे हम से बड़े, छोटे, या हमारे बराबर के हों, उनके आदर को बना कर रखें और उनके प्रति कर्तव्य को पूरा करें।

इफ़िसियों 5:21; 1 पतरस 2:17; रोमियों 12:10.

प्र. 65. पाँचवी आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. पाँचवी आज्ञा हर एक व्यक्ति के विभिन्न पदों और हमारे साथ उनके सम्बन्धों के अनुसार, उनके प्रति आदर और कर्तव्य की उपेक्षा करना या उनके विरूद्ध कुछ भी करने को मना करती है।

मत्ती 15:4 – 6; यहेजेकेल 34:2 – 4; रोमियों 13:8.

प्र. 66. पाँचवी आज्ञा के साथ क्या तर्क जुड़ा है?

उ. पाँचवी आज्ञा के साथ जुड़ा तर्क यह है, कि वे सभी जो इस आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें लम्बी आयु और सफलता की प्रतिज्ञा की गयी है (जब तक इससे परमेश्वर की महिमा व उनकी भलाई होती है)।

व्यवस्थाविवरण 5:16; इफ़िसियों 6:2 – 3.

प्र. 67. छठी आज्ञा क्या है?

उ. छठी आज्ञा यह है कि तू खून न करना।

निर्गमन 20:13.

प्र. 68. छठी आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. छठी आज्ञा में आवश्यक है, कि हम, अपने जीवन और दूसरों के जीवन की सुरक्षा के लिये, सब उचित प्रयास करते रहें।

इफ़िसियों 5:28 – 29; 1 राजा 18:4.

प्र. 69. छठी आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. छठी आज्ञा हमारे स्वयं के जीवन या अपने पड़ोसी के जीवन को अन्यायपूर्वक समाप्त करने, या किसी भी ऐसे कार्य को करने के लिए मना करती है, जिससे ऐसा हो सकता है।

प्रेरितों के काम 16:28; उत्पत्ति 9:6.

प्र. 70. सातवीं आज्ञा क्या है?

उ. सातवीं आज्ञा यह है कि, तू व्यभिचार न करना।

निर्गमन 20:14.

प्र. 71. सातवीं आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. सातवीं आज्ञा में आवश्यक है कि हम स्वयं अपनी और अपने पड़ोसी की यौन पवित्रता को हृदय, बातचीत और व्यवहार में सुरक्षित बनाये

रखें।

1 कुरिन्थियों 7:2 – 3, 5, 34, 36; कुलुस्सियों 4:6; 1 पतरस 3:2.

प्र. 72. सातवीं आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. सातवीं आज्ञा सभी कामुकता वाले विचारों, शब्दों और कार्यों को मना करती है।

मत्ती 15:19; मत्ती 5:28; इफ़िसियों 5:3 – 4.

प्र. 73.आठवीं आज्ञा क्या है?

उ. आठवीं आज्ञा यह है कि, तू चोरी न करना।

निर्गमन 20:15.

प्र. 74. आठवीं आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. आठवीं आज्ञा में आवश्यक है, कि अपने और दूसरों के, धन-सम्पति एवं बाहरी कल्याण को उचित रीति से कमाना और बढ़ाना।

उत्पत्ति 30:30; 1 तीमुथियुस 5:8; लैव्यवस्था 25:35; व्यवस्थाविवरण 22:1 – 5; निर्गमन 23:4 – 5; उत्पत्ति 47:14, 20.

प्र. 75. आठवीं आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. आठवीं आज्ञा में ऐसी कोई भी बात मना है, जो हमारे स्वयं के या दूसरों के धन-सम्पत्ति या बाहरी कल्याण को अनुचित रीति से बाधित करती है।

नीतिवचन 21:17; नीतिवचन 23:20 – 21; नीतिवचन 28:19; इफ़िसियों 4:28.

प्र. 76. नवीं आज्ञा क्या है?

उ. नवीं आज्ञा यह है कि, तू अपने पड़ोसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।

निर्गमन 20:16.

प्र. 77. नवीं आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. नवीं आज्ञा में आवश्यक है, कि मनुष्य-मनुष्य के बीच सत्य को बनाये रखें और प्रोत्साहित करें, और अपने एवं अपने पड़ोसी के अच्छे नाम को बनाये रखें एवं प्रोत्साहित करें, विशेषकर जब न्यायालय में साक्षी देते हैं।

जकर्याह 8:16; 3 यूहन्ना 1:12; नीतिवचन 14:5, 25.

प्र. 78. नवीं आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. नवीं आज्ञा ऐसी कोई भी बात मना करती है, जो सत्य को विकृत करे, अथवा जो हमारे स्वयं या हमारे पड़ोसी के अच्छे नाम के लिये हानिकारक हो।

1 शमूएल 17:28; लैव्यवस्था 19:16; भजन संहिता 15:3.

प्र. 79. दसवीं आज्ञा क्या है?

उ. दसवीं आज्ञा यह है कि, तू अपने पड़ोसी के धर का लालच न करना; न तो अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच करना, और न उसके किसी के दास-दासी या बैल-गदहे का, न अपने पड़ोसी की किसी वस्तु का लालच करना।”

निर्गमन 20:17.

प्र. 80. दसवीं आज्ञा में क्या करना आवश्यक है?

उ. दसवीं आज्ञा में आवश्यक है, कि अपनी स्वयं की दशा पर पूर्ण संतोष रखना, और दूसरों, और जो भी कुछ उनका है, उसके प्रति उचित और प्रेम वाली आत्मिक मंशा (स्वभाव) रखना।

इब्रानियों 13:5; 1 तीमुथियुस 6:6; अय्युब 31:29; रोमियों 12:15; 1 तीमुथियुस 1:5; 1 कुरिन्थियों 13:4 – 7.

प्र. 81. दसवीं आज्ञा में क्या मना किया गया है?

उ. दसवीं आज्ञा में अपनी दशा के बारे में सभी असन्तुष्टी, अपने पड़ोसी की अच्छी दशा पर दुखित होना या जलन रखना, और, जो भी कुछ उसका है, उसके प्रति अनुचित कार्य करना व लगाव रखना मना है।

1 राजा 21:4; एस्तर 5:13; 1 कुरिन्थियों 10:10; गला 5:26; याकूब 3:14, 16; रोमियों 7:7 – 8; रोमियों 13:9; व्यवस्थाविवरण 5:21.

प्र. 82. क्या कोई मनुष्य इस योग्य है, कि वह सिद्धता परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा कर सके?

उ. पाप में गिरावट के बाद कोई भी मनुष्य मात्र, इस जीवन में इस योग्य नहीं, कि सिद्धता से परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा कर सके, वरन प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन विचार, बातों और कार्यों में उनका उल्लंघन करता है।

सबोपदेशक 7:20; 1 यूहन्ना 1:8, 10; गलातियों 5:17; उत्पत्ति 6:5; उत्पत्ति 8:21; रोम 3:9 – 21; याकुब 3:2 – 13.

प्र. 83. क्या परमेश्वर की व्यवस्था के सभी उल्लंघन एक समान घृणित हैं?

उ. नहीं! कुछ पाप अपने आप में, और कई भ्रष्ट विकृतियों के कारण, अन्य पापों की अपेक्षा परमेश्वर की दृष्टि में अधिक घृणित हैं।

यहेजेकेल 8:6, 13, 15; 1 यूहन्ना 5:16; भजन संहिता 78:17, 32, 56.

प्र. 84. प्रत्येक पाप का प्रतिफल क्या है?

उ. प्रत्येक पाप का प्रतिफल, इस जीवन और आने वाले जीवन में, परमेश्वर का क्रोध व श्राप है।

इफ़िसियों 5:6; गला 3:10; विलापगीत 3:39; मत्ती 25:41.

प्र. 85. परमेश्वर हमसे क्या चाहता है, कि, पाप के कारण हम पर आये, उसके क्रोध व श्राप से हम बच सकें?

उ. पाप के कारण हम पर आये उसके क्रोध व श्राप से बचने के लिए, परमेश्वर चाहता है, कि हम यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास करें, जीवन के लिए मन फिराएँ, और उन सभी बाहरी साधनों का, जिनसे ख्रीष्ट हमें छुटकारे (उद्धार) का लाभ पहुँचाता है, उत्साहपूर्वक उपयोग करें।

प्रेरितों के काम 20:21; नीतिवचन 2:1 – 5; नीतिवचन 8:33 – 36; यशायाह 55:3.

प्र. 86 .यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास क्या है?

उ. यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास उद्धार देने वाला ऐसा अनुग्रह है, जिसके द्वारा हम उद्धार के लिये केवल उसी को ऐसे स्वीकार और उस पर ऐसा भरोसा करते हैं, जैसे वह सुसमाचार में हमारे लिए प्रस्तुत किया गया है।

इब्रानियों 10:39; यूहन्ना 1:12; यशायाह 26:3 – 4; फ़िलिप्पियों 3:9; गला 2:16.

प्र. 87. जीवन के लिए मन फिराव क्या है?

उ. जीवन के लिए मन फिराव, उद्धार देने वाला ऐसा अनुग्रह है, जिसके द्वारा एक पापी व्यक्ति, पाप का वास्तविक आभास पाकर, और ख्रीष्ट में

परमेश्वर की दया को पहचानकर, अपने पाप के प्रति शोक एवं घृणा के साथ, उस (पाप) से पूर्ण उद्देश्य और प्रयास के साथ नई आज्ञा पालन करके परमेश्वर की ओर फिरता है।

प्रेरितों के काम 11:18; प्रेरितों के काम 2:37 – 38; योएल 2:12; यिर्मयाह 3:22; यिर्मयाह 31:18 – 19; यहेजेकेल 36:31; 2 कुरिन्थियों 7:11; यशायाह 1:16 – 17.

प्र. 88. वे बाहरी साधन क्या हैं, जिनके द्वारा ख्रीष्ट हमें छुटकारे के लाभों को पहुँचाता है?

उ. वे बाहरी व साधारण साधन, जिनके द्वारा ख्रीष्ट हमें छुटकारे के लाभों पहुँचाता है, उसकी ठहराई हुई विधियाँ, विशेष रूप से उसका वचन (बाइबल), पवित्र मसीही संस्कार और प्रार्थना हैं ; ये सब उद्धार के लिए उसके चुने हुए लोगों में प्रभावी बनाए जाते हैं।

मत्ती 28:18 – 20; प्रेरितों के काम 2:42, 46 – 47.

प्र. 89. वचन (बाइबल) को किस प्रकार से उद्धार के लिए प्रभावशाली बनाया जाता है?

उ. परमेश्वर का आत्मा, पापियों को क़ायल करने एवं उनके मन फिराने के लिये, और उन्हें उद्धार के लिए विश्वास के द्वारा पवित्रता एवं दिलासा में बढ़ाने के लिए, वचन (बाइबल) के पढ़े जाने को, विशेष रूप से वचन के प्रचार किए जाने को एक प्रभावशाली साधन बनाता है।

नहेम्याह 8:8; 1 कुरिन्थियों 14:24 – 25; प्रेरितों के काम 26:18; भजन संहिता 19:8; प्रेरितों के काम 20:32; रोमियों 15:4; 2 तीमुथियुस 3:15 – 17; रोमियों 10:13 – 17; रोमियों 1:16.

प्र. 90. वचन (बाइबल) को किस प्रकार पढ़ना और सुनना चाहिए, जिससे कि वह उद्धार के लिए प्रभावी बन जाये?

उ. उद्धार के निमित वचन को प्रभावी बनने के लिए, हमें परिश्रमशीलता, तैयारी, एवं प्रार्थना के साथ इस पर सावधानीपूर्वक मनन करना चाहिए; हमें प्रेम और विश्वास के साथ उसे स्वीकार करना, अपने हृदयों में रख छोड़ना, और अपने जीवन में उसे लागू करना चाहिए।

नीतिवचन 8:34; 1 पतरस 2:1 – 2; भजन संहिता 119:18; इब्रानियों 4:2; 2 थिस्सलुनिकियों 2:10; भजन संहिता 119:11; लूका 8:15; याकूब 1:25.

प्र. 91. मसीही संस्कार (Sacraments) किस प्रकार उद्धार के लिये प्रभावी साधन बनते हैं?

उ. मसीही संस्कार (Sacraments) उद्धार के लिए प्रभावी साधन बन जाते हैं, इस कारण से नहीं कि उनमें या उन लोगों में जो उनका प्रबंधन करते हैं, कोई विशेष व श्रेष्ठ शक्ति है, परंतु इसके विपरीत केवल ख्रीष्ट की आशीष और उसकी आत्मा का उन लोगों में कार्य करने से, जो उन पवित्र संस्कारों में विश्वास के साथ भाग लेते हैं।

1 पतरस 3:21; मत्ती 3:11; 1 कुरिन्थियों 3:6 – 7; 1 कुरिन्थियों 12:13.

प्र. 92. मसीही संस्कार (Sacrament) क्या है?

उ. मसीही संस्कार (Sacrament), ख्रीष्ट द्वारा नियुक्त किया गया, एक पवित्र संस्कार है, जिसमें इंद्रियों से अनुभव योग्य चिन्हों द्वारा, ख्रीष्ट और नई वाचा की आशीषें, विश्वासियों के लिए प्रस्तुत, प्रमाणित एवं लागू की जाती हैं।

उत्पत्ति 17:7, 10; निर्गमन 12; 1 कुरिन्थियों 11:23, 26.

प्र. 93. नये नियम के मसीही संस्कार (Sacraments) कौन से हैं?

उ. नये नियम के मसीही संस्कार (Sacraments) बपतिस्मा और प्रभु भोज हैं।

मत्ती 28:19; मत्ती 26:26 – 28.

प्र. 94. बपतिस्मा क्या हैं?

उ. बपतिस्मा, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में जल से स्नान का एक मसीही संस्कार (Sacrament) है, जो ख्रीष्ट में हमारे साटे (Ingrafting) जाने, और अनुग्रह की वाचा के लाभों को प्राप्त करने, और प्रभु के होने के लिए हमारे जुड़ाव को दिखाता एवं प्रमाणित करता है।

मत्ती 28:19; रोमियों 6:4; गलातियों 3:27.

प्र. 95. किन लोगों को बपतिस्मा देना उचित है?

उ. बपतिस्मा किसी भी उस व्यक्ति को नहीं दिया जाना चाहिए जो किसी सदृश्य कलीसिया का सदस्य नहीं है, जब तक कि वे ख्रीष्ट में अपने विश्वास का और उसकी आज्ञापालन का अंगीकार न कर लें; लेकिन सदृश्य कलीसिया के सदस्यों के बच्चों को भी बपतिस्मा दिया जाना चाहिए।

प्रेरितों के काम 8:36 – 37; प्रेरितों के काम 2:38 – 39; उत्पत्ति 17:10 के साथ कुलुस्सियों 2:11 – 12; 1 कुरिन्थियों 7:14.

प्र. 96. प्रभु भोज क्या है?

उ. प्रभु भोज एक मसीही संस्कार (Sacrament) है, जिसमें रोटी एवं दाखरस

को देने एवं ग्रहण करने के द्वारा, ख्रीष्ट की आज्ञा के अनुसार, उसकी मृत्यु को दिखाया व प्रचार किया जाता है; जो लोग उचित रीति से प्रभु भोज को ग्रहण करते हैं, वे उसके सभी लाभों के साथ, अपने आत्मिक पोषण एवं अनुग्रह में बढ़ने के लिए, ख्रीष्ट की देह एवं लहू में, शारीरिक व भौतिक रूप से नहीं, बल्कि विश्वास के द्वारा सहभागिता करते हैं।

1 कुरिन्थियों 11:23 – 26; 1 कुरिन्थियों 10:16.

प्र. 97. प्रभु भोज को उचित रीति से लेने के लिये क्या आवश्यक है?

उ. प्रभु भोज को उचित रीति से प्राप्त करने वालों के लिए यह आवश्यक है, कि वे प्रभु की देह को पहचानने के लिए अपने ज्ञान, उसमें पोषण पाने के लिए अपने विश्वास, और अपने पश्चाताप, प्रेम और नई आज्ञाकारिता के लिए स्वयं की जाँच करें। नहीं तो, यदि वे अनुचित रीति से प्रभु भोज प्राप्त करते हैं, तो इसके खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड को लेकर आते हैं।

1 कुरिन्थियों 11:28 – 29; 2 कुरिन्थियों 13:5; 1 कुरिन्थियों 11:31; 1 कुरिन्थियों 10:16 – 17; 1 कुरिन्थियों 5:7 – 8.

प्र. 98. प्रार्थना क्या है?

उ. प्रार्थना, ख्रीष्ट के नाम में, अपने पापों का अंगीकार करने और परमेश्वर की दया के प्रति धन्यवाद के साथ स्वीकृति के साथ, अपनी इच्छाओं को उन बातों के लिए परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करना है, जो उसकी इच्छा के अनुसार है।

भजन संहिता 62:8; 1 यूहन्ना 5:14; यूहन्ना 16:23; भजन संहिता 32:5 – 6; दानिय्येल 9:4; फिलिप्पियों 4:6.

प्र. 99. प्रार्थना में हमारे अगुआई करने के लिये परमेश्वर ने क्या नियम दिया है?

उ. परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन प्रार्थना करने में हमारे अगुआई के लिये सहायक है; परन्तु अगआई का विशेष नियम ख्रीष्ट द्वारा उसके चेलों को सिखाई गई प्रार्थना है, जिसे सामान्यतः “प्रभु की प्रार्थना” कहते हैं।

1 यूहन्ना 5:14; मत्ती 6:9 – 13 के साथ लूका 11:2 – 4.

प्र. 100. प्रभु की प्रार्थना की प्रस्तावना हमें क्या सिखाती है?

उ. प्रभु की प्रार्थना की प्रस्तावना [यानी “हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है”] हमें यह सिखाती है, कि हम पूर्ण पवित्र आदर और भरोसे के साथ परमेश्वर के निकट आएँ, जैसे बच्चा पिता के पास जाता है, क्योंकि वह हमारी सहायता करने को सामर्थी और तैयार है। साथ में यह भी सिखाती है, कि हमें दूसरों के साथ और दूसरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

मत्ती 6:9; रोमियों 8:15; लूका 11:13; प्रेरितों के काम 12:5; 1 तीमुथियुस 2:1 – 2.

प्र. 101. हम पहली विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. पहली विनती में [यानी “तेरा नाम पवित्र माना जाये”] हम प्रार्थना करते हैं, कि परमेश्वर हमें और दूसरों को इस योग्य बनाए, कि सभी बातों में, जिनके द्वारा वह अपने आपको प्रगट करता है, हम उसकी महिमा करें, और यह कि वह सभी बातों को अपनी महिमा के लिए कार्यान्वित करेगा।

मत्ती 6:9; भजन संहिता 67:2 – 3; भजन संहिता 83.

प्र. 102. हम दूसरी विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. दूसरी विनती में [यानी “तेरा राज्य आये”] हम यह प्रार्थना करते हैं, कि

शैतान का राज्य नाश किया जाये; और यह कि अनुग्रह का राज्य बढ़ाया जाए, हम और दूसरे लोग इसमें लाए जायें और इसमें रखे जायें, और यह कि महिमा का राज्य शीघ्र आये।

मत्ती 6:10; भजन संहिता 68:1, 18; प्रकाशितवाक्य 12:10 – 11; 2 थिस्सलुनिकियों 3:1; रोमियों 10:1; यूहन्ना 17:9, 20; प्रकाशितवाक्य 22:20.

प्र. 103. हम तीसरी विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. तीसरी विनती में [यानी "तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो"] हम यह प्रार्थना करते हैं, कि परमेश्वर, अपने अनुग्रह के द्वारा, हमें सभी बातों में उसकी इच्छा को पहचानने, आज्ञा मानने और उसके आधीन रहने के लिए योग्य एवं इच्छुक बनाए, जैसे कि स्वर्ग में स्वर्गदूत करते हैं।

मत्ती 6:10; भजन संहिता 67; भजन संहिता 119:36; मत्ती 26:39; 2 शमूएल 15:25; अय्युब 1:21; भजन 103:20 – 21.

प्र. 104. हम चौथी विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. चौथी विनती में [यानी "हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे"] हम प्रार्थना करते हैं, कि परमेश्वर के मुफ़्त दान से, हम इस जीवन की अच्छी वस्तुओं का एक पर्याप्त हिस्सा प्राप्त करें, और उनके साथ परमेश्वर की आशीषों का आनन्द मनाएँ।

मत्ती 6:11; नीतिवचन 30:8 – 9; उत्पत्ति 28:20; 1 तीमुथियुस 4:4 - 5.

प्र. 105. हम पांचवीं विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. पांचवीं विनती में, [यानी "जैसे हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं

वैसे ही हमारे अपराधों को क्षमा कर”] हम प्रार्थना करते हैं, कि परमेश्वर, ख्रीष्ट के निमित्त, हमारे सब पापों को सेंत-मेंत क्षमा करे; हम हियाव के साथ इसे माँग पाते हैं, क्योंकि उसके अनुग्रह के द्वारा, हम दूसरों को हृदय से क्षमा करने के योग्य बनाये जाते हैं।

मत्ती 6:12; भजन संहिता 51:1 – 2, 7, 9; दानिय्येल 9:17 – 19; लूका 11:4; मत्ती 18:35.

प्र. 106. हम छठवीं विनती में क्या प्रार्थना करते हैं?

उ. छठवीं विनती में, [यानी “हमें परीक्षा में न ला, परंतु बुराई से बचा”] हम यह प्रार्थना करते हैं, कि परमेश्वर हमें या तो पाप में पड़ने की परीक्षा से बचाए, या जब हमारी परीक्षा होती है, तब वह हमें सम्भाले और पाप से बचा कर रखे।

मत्ती 6:12; मत्ती 26:41; 2 कुरिन्थियों 12:7 – 8.

प्र. 107. प्रभु की प्रार्थना का निष्कर्ष हमें क्या सिखाता है?

उ. प्रभु की प्रार्थना का निष्कर्ष [अर्थात “क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।”] हमें यह सिखाता है, कि हम प्रार्थना में अपना प्रोत्साहन केवल परमेश्वर से लें, और अपनी प्रार्थनाओं में, उस के राज्य, पराक्रम और महिमा के लिये (उसे श्रेय देते हुए) उसकी प्रशंसा करें; और हमारी प्रार्थना के सुने जाने की लालसा और निश्चितता की साक्षी में हम कहते हैं, आमीन [अर्थात ऐसा ही हो]।

मत्ती 6:13; दानिय्येल 9:4 – 9, 16 – 19; 1 इतिहास 29:10 – 13; 1 कुरिन्थियों 14:16; प्रकाशितवाक्य 22:20 – 21.

“वेस्टमिन्स्टर असेम्बली (Westminster Assembly) के विद्वान संतों द्वारा तैयार किया गया, हमारा अपना मसीही धर्म-प्रश्नोत्तरी (Catechism), किसी भी अन्य की तुलना में मसीही सत्य का सबसे अधिक सटीक एवं सम्पूर्ण कथन है। डॉ. शाफ्फ का कहना है कि ‘यह प्रोटेस्टेन्ट मसीही सम्प्रदाय के उन तीन विशिष्ट धर्म-प्रश्नोत्तरियों में से एक है, जो अंत के समय तक रहेगा। यह क्षमता और प्रभाव में पूरी रीति से लूथर और हायडलबर्ग मसीही धर्म-प्रश्नोत्तरियों के बराबर है, यह वाक्य-रचना, मसीही विश्वास और सिद्धांत की स्पष्टता एवं सावधानी में उनसे कही अधिक बढ़कर है... ’ और शिक्षकों की रूढ़िवादिता की जाँच के लिए एक उपयुक्त परीक्षण है।’ यह अन्यों के समान ही पाठों के पारम्परिक समूह, विश्वास-सिद्धांत, दस आज्ञाओं और प्रभु की प्रार्थना पर आधारित है, जो कि कलीसिया के सभी धर्म-प्रश्नोत्तरियों के लिए आम है।” ए. ए. हॉज

“हमारे हाथों में सत्य का वचन है, और दिव्य सत्यों की कई सुव्यवस्थित प्रणालियाँ हैं, जिनमें वेस्टमिन्स्टर में संतों की आदरणीय सभा द्वारा रचित संक्षिप्त मसीही धर्म-प्रश्नोत्तरी को, तीन राष्ट्रों के बीच तब इच्छित एकरूपता के भाग के रूप में, गम्भीर गठबंधन और अनुबंध के अनुसरण में, प्रमुख माना जाता है।” थॉमस बॉस्टन

“असेम्बली की संक्षिप्त धर्म-प्रश्नोत्तरी को लम्बे समय से और उचित रूप से मसीही धार्मिक ज्ञान का एक उत्कृष्ट सार-संग्रह माना जाता है।” जॉन व्हाइटक्रॉस

“लेकिन उन सभी के बीच, रूढ़िवादिता, पूर्णता, और प्रणाली के लिए असेम्बली की इस छोटी धर्म-प्रश्नोत्तरी से अधिक श्रेष्ठ कोई भी नहीं है।” जॉन फ्लावेल

“संक्षिप्त धर्म-प्रश्नोत्तरी वाला छोटा लड़का बनना सार्थक है। वे बड़े होकर पुरुष बनते हैं। और इससे भी बेहतर, वे परमेश्वर के लोग बनने के लिए अत्यधिक योग्य बनते हैं।” बी. बी. वॉरफील्ड

www.rtf-usa.com
rtfdirector@gmail.com